संपादकीय

प्रिय पाठकों, हमें आपको यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विद्यालयी और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए अपने पचास वर्ष पूरे कर चुकी है। 1961 में कई केंद्रीय शैक्षिक संस्थानों को समावेशित कर स्थापित हुई यह संस्था राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसी संस्था है जो विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा दोनों क्षेत्रों में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यसामग्री के विकास, शोध, प्रशिक्षण तथा विस्तार का कार्य करती है। यही नहीं, व्यावसायिक शिक्षा, समावेशी शिक्षा, शिक्षा में जेंडर के मुद्दे, शैक्षिक प्रौद्योगिकी अर्थात् शिक्षा से जुड़े लगभग हर पहलू पर काम करने वाले अपने संकाय सदस्यों के दल के साथ यह संस्था इन सभी पहलुओं पर राज्यों की क्षमताओं का भी निर्माण और विकास करने का अथक प्रयास करती है। आज इन प्रयासों का ही नतीजा है कि देश के लगभग सभी राज्य एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 का अनुकरण करते हुए पाठ्यचर्या सुधारों की ओर अग्रसर हैं। यही नहीं, यह संस्था मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा समय–समय पर शैक्षिक अभियानों और योजनाओं की शुरुआत से उनके क्रियान्वयन तक में शामिल रहती है और इसमें भी यह राज्यों को पूरा सहयोग प्रदान करती है।

अपने पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों यथा अजमेर, भोपाल, मैसूर, भुवनेश्वर और शिलांग; केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, नयी दिल्ली; पण्डित सुन्दर लाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल; राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नयी दिल्ली के साथ एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही है। पचास वर्ष के इस गहन अनुभव को लिए हुए इस संस्था ने आत्मावलोकन करना आरंभ कर दिया है।

भविष्य में विद्यालयी शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में उभरती चुनौतियों ने भी इसे आगाह किया है कि यह इन क्षेत्रों में नयी सोच और नवाचारों को प्राथमिकता दे ताकि पारंपरिक शैक्षिक प्रविधियों में बदलाव लाकर विविध पृष्ठभूमियों से विद्यालयों में प्रवेश कर रहे बच्चों को स्कूली शिक्षा में सफलता के अनुभव दिए जा सकें।

यह तो था एन.सी.ई.आर.टी के पचास वर्षों का एक संक्षिप्त परिचय। एन.सी.ई.आर.टी. के भूतपूर्व निदेशक प्रोफ़ेसर ए. के. शर्मा ने इस संस्था के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर

दिए गए संभाषण के ज़रिये इस परिचय को एक विश्लेषणात्मक विस्तार दिया। पाठकों के लिए इस संभाषण का हिन्दी अनुवाद इस अंक में शामिल किया गया है।

इस संभाषण के साथ ही प्रस्तुत हैं वैविध्य को समेटे हुए अन्य कई लेख। यथा – 'शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में जेंडर विभेदीकरण : एक आलोचनात्मक अध्ययन'; 'भारत का राजनीतिक दर्शन'; 'शिक्षक–प्रशिक्षकों का सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण एवं इसकी सुगमता'; 'लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की शैक्षिक विचारधारा'; 'ऐसे करें आत्मनिरीक्षण'; 'मुक्त शिक्षा प्रणाली में गणित विषय की स्व–अनुदेशन सामग्री पर अधिगमकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन'; 'आधुनिक संदर्भ में प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन'; 'शिक्षा का अधिकार : एक विश्लेषण'; 'मानवीय मूल्यों से समन्वित अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता'; 'शिक्षक ऐसा हो!'; 'जेंडर असमानता : एक ऐतिहासिक अध्ययन' तथा 'क्या अच्छा दिन है?'

हमारे प्रिय लेखकों और पाठकों, एन.सी.ई.आर.टी. के पचास वर्ष पूरे होने के इस मंज़र पर हम आपका आभार प्रकट करते हैं क्योंकि आप भी हमारी इस यात्रा में सदैव शामिल रहे हैं। आपके विचारों ने जो मार्गदर्शन दिया उससे एन.सी.ई.आर.टी. की गुणवत्ता में विस्तृत सुधार हुआ। हम अपेक्षा करते हैं कि भविष्य में भी आप अपने लेखों, विचारों और टिप्पणियों के माध्यम से इस संस्था से जुड़े रहेंगे और शैक्षिक सुधार की प्रक्रिया में हमारे सहयोगी बने रहेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति